गांव, जिला और देश से पलायन करने वाले बड़े बुद्धिमान कहलाने लगते हैं: दिवाकर

जनसत्ता ब्यूरो

लखनऊ, 29 सितंबर। अब लोग पलायन करने वाली चिड़ियां बन रहे हैं, जो गांव जिला और देश छोड़ देते हैं उन्हें उसी क्रम में बड़ा बुद्धिमान घोषित कर दिया जाता है। हमारी शिक्षा व्यवस्था केंद्रीकरण को पढ़ाती है और इससे मैनेजर तैयार होते हैं, ऐसे में कैसे विकेंद्रीकरण पर बात की जा सकती है। यह बात यहां एएन सिन्हा इंस्टीट्यूट आफ सोशल स्टडीज के निदेशक डॉ डीएम दिवाकर ने कही। वे जिला स्तरीय नियोजन की आवश्यकता पर सेंटर फार स्टडी आफ डवलपमेंट सोसाइटीज और इन्क्लूसिव मीडिया फार चेंज की ओर से आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला में बोल रहे थे।

कार्यशाला में नियोजन की आवश्यकताओं और इसके प्रचार-प्रसार की संभावनाओं पर 27 और 28 सितंबर को चार सत्र में बातें हुई, जिनमें खासकर प्रदेश के विभिन्न हिस्से से पत्रकारिता से जुड़े लोगों ने हिस्सा लिया था। वकर्शाप के पहले दिन उदघाटन सत्र में बोलते हुए इन्क्लूसिव मीडिया फॉर चेंज के निदेशक डॉ विपुल मुदगल इस पूरे सेमीनार के उद्देश्यों से प्रतिभागियों का परिचय करवाया। इसी सत्र में उत्तर प्रदेश के प्रमुख सचिव प्लानिंग संजीव नैयर ने नियोजन और कनवर्जेन्स या संगमन में मीडिया की भूमिका के पहलुओं को भी सबके बीच में रखा, जिनमें मीडिया सरकार की नियोजन संबंधी योजनाओं को आम जन तक पहुंचाने आवश्यकता के बारे में बताया। इसी के साथ ही संयुक्त राष्ट्र और भारत सरकार के नियोजन और कार्यक्रम की नोडल अफसर मृदुला सिंह ने भी कार्यक्रम के परिचय और विचार प्रस्तुत किए।

आरंभिक परिचय के बाद कार्यशाला के पहले सत्र की अध्यक्षता पत्रकार नवीन जोशी ने की थी। इस सत्र में पश्चिम बंगाल के पंचायत और ग्राम विकास के पूर्व सचिव और पूर्व में प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक रह चुके एमएन राय ने प्रतिभागियों के सामने नियोजन से भारत में विकेंद्रीकरण के साथ नियोजन की ओर परिवर्तन पर एक प्रस्तुति का प्रदर्शन करते हुए विकेंद्रीकरण के कई माडल दिखाए और सुझाए। उन्होंने बंगाल और केरल के माडल के फायदे और इससे ग्राम स्तर पर भागीदारी सुनिश्चित कराने की व्यवस्था को भी बताया।

एएन सिन्हा इंस्टीट्यूट आफ सोशल स्टडीज के निदेशक डॉ डीएम दिवाकर ने जिला स्तरीय नियोजन में भागीदारी और इसकी आवश्यकता तथा जरूरत पर एक व्याख्यान दिया। डॉ दिवाकर ने कहा की उत्तर प्रदेश एक महादेश है, यहां व्यवस्था के चार अलग जोन हैं, जिनमें अलग-अलग तरह से नियोजन की जरूरत होती है। उन्होंने कहा कि ग्राम स्तरीय नियोजन जिसके लिए सारी बात की जा रही है उसमें उसी ग्राम स्तर के ही आदमी को वहां के लिए योजना तय करने की जरूरत है। विकेंद्रीकरण नियोजन में इन सब बातों का समावेश होना होगा। पलायन पर बोलते हुए डॉ दिवाकर ने कहा कि अब लोग पलायनवादी चिड़ियां बन रहे हैं, जो गांव, जिला और देश छोड़ देते हैं उन्हें उसी क्रम में बड़ा बुद्धिमान घोषित कर दिया जाता है।

दिवाकर ने बताया कि हमारी शिक्षा व्यवस्था केंद्रीकरण को पढ़ाती है और इससे मैनेजर तैयार होते हैं, ऐसे में कैसे विकेंद्रीकरण पर बात की जा सकती है। व्याख्यान और प्रस्तुति के बाद अध्यक्ष टिपण्णी और प्रतिभागियों के बीच से सवाल-जवाब का क्रम हुआ, जिसमें डॉ दिवाकर, पूर्व आईएएस अधिकारी एमएन रॉय और नवीन जोशी ने जवाब दिए।

दूसरे सत्र का प्रमुख विषय मीडिया खास तौर पर जिलों में मीडिया की विकेंद्रीकरण नियोजन के अनुसार भूमिका पर चर्चा आयोजित की गई थी। इस सत्र की अध्यक्षता पत्रकार राम दत्त त्रिपाठी ने किया और इस चर्चा की शुरुआत में ही अध्यक्ष की ओर से प्रतिभागियों के सवाल और सुझाव आमंत्रित किए गए, जिससे कार्यक्रम की शुरुआत उसी अनुसार किया जा सके। प्रतिभागियों के तरफ से मीडिया में रिपोर्टर की व्यक्तिगत और कार्यस्थल की समस्या, खबरों के छपने में संपादकीय हस्तक्षेप और सबसे बढ़कर मीडिया में बढ़ रहे पूंजीवाद पर सवाल आए इसी के साथ ही न्यू मीडिया की भूमिका और जिलों में पत्रकारों के प्रशिक्षण पर भी बात चर्चा में सामने आई।

प्रेस कौंसिल आफ इंडिया के सदस्य और पत्रकार प्रंजोय गुहा ठाकुरता ने नियोजन और विकास योजनाओं में मीडिया के कनवर्जेन्स पर बात शुरू करते हुए मीडिया के कारपोरेटाईजेशन और समाचारों में बढ़ते हस्तक्षेप से निपटने के उपाय भी समझाए। प्रंजोय ने बताया कि यदि किसी पत्रकार की मुद्दे पर बनाई हुई उसके अखबार में नहीं छप रही हैं तो उसके लिए सही मौके का इंतजार कीजिए या किसी दूसरे मित्र पत्रकार को दीजिए जिससे खबर छपकर तो बाहर आएगी। मीडिया मालिकों पर भी प्रंजोय ने कई तथ्यों का खुलासा किया कि कई घोटालों में लिप्त लोग बड़े बड़े अखबार और चैनल चला रहे हैं। साथ ही बड़े कारपोरेट घराने तमाम न्यूज चैनलों और समाचार समूहों पर नियंत्रण कर चुके हैं। उन्होंने नाम लेकर उदहारण भी दिए।

लखनऊ विश्वविद्यालय की पूर्व कुलपति डॉ रूपरेखा वर्मा ने मीडिया की जवाबदेही और मुद्दों को उठाने की क्षमता से अपनी चर्चा की शुरुआत मीडिया के प्रति सकारात्मक रुख से किया। डॉ रूपरेखा ने बताया कि आज मीडिया के ताकतवर होने हमें छोटी से छोटी घटनाओं की सूचना बहुत ही तीव्रता के साथ मिल जाती है। मीडिया में कई सारी खराबियां हो गई हैं लेकिन अभी भी निराशा का दौर नहीं आया है। इन्क्लूसिव मीडिया फार चेंज के निदेशक विपुल मुदगल ने विकेन्द्रीकरण नियोजन पर मीडिया कवरेज को लेकर अपने विचार व्यक्त किए।

Page No. 4 Jansatta 30 September Lucknow Ed.